

नंदिसूतं (फोल्डर नं. ११५०)

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय

गंथसमप्पणं

ग्रन्थसमर्पण

प्रकाशकीय निवेदन

प्रस्तावना

विषयानुक्रम

चूर्णिकारका उपक्रम-प्रारम्भ-----	१
१ गाथा १३ मङ्गलसूत्र-गाथा २-३ महावीरपरमात्माकी स्तुति-----	२
२ गाथा ४-१७ सङ्घस्तुतिसूत्र-श्रीसंघकी रथ, चक्र, नगर, पद्म, चन्द्र, सूर्य, समुद्र और मन्दरगिरिके रूपकों द्वारा स्तुति-----	३-६
३ गाथा १८-१९ जिनावलीसूत्र-चोवीस जिनोंको नमस्कार-----	६
४ गाथा २०-२१ गणधरावलीसूत्र-भगवान् महावीरके ११ गणधरोंकी स्तुति-----	७
५ गाथा २२-४२ स्थविरावलीसूत्र-श्रुतस्थविरोंकी स्तुति-----	७-१२
गा. २२ सुधर्मा, जम्बूस्वामि, प्रभवस्वामि, शय्यम्भव, गा. २३ यशोभद्र, सम्भूताय, भद्रबाहु, स्थूलभद्र, गा. २४ महागिरि, सुहस्ती, बहुल, गा. २५ स्वाति, श्यामार्य, शाण्डिल्य, जीवधर, गा. २६ आर्यसमुद्र, गा. २७ आर्यमङ्गु, गा. २८ आर्यनन्दिल, गा. २९ वाचक आर्यनागहस्ती, गा. ३० रेवतिनक्षत्र वाचक, गा. ३१ सिंहवाचक, गा. ३२ स्कन्दिलाचार्य, गा. ३३ हिमवन्त गा. ३४-३५ नागार्जुन वाचक, गा. ३६-३८ भूतदिन्नाचार्य, गा. ३९ लौहित्य, ४०-४१ दुध्यगणि, गा. ४२ लसामान्यरूपसे सर्व स्थविरोंकी स्तुति	
६ गा. ४३ पर्षत्सूत्र-श्रुतज्ञानके-शास्त्रके अधिकारि-अनधिकारी शिष्यों की परीक्षाके लिये शैलघन, कुट, चालनी, परिपूणक, हंस आदिके लाक्षणिक उदाहरण और जपर्षद् अजपर्षद् एवं दुर्विदग्धपर्षत्-----	१२
७. ज्ञानसूत्र-पांच ज्ञानके नाम-----	१३
मत्यादि पांच ज्ञानकी व्युत्पत्ति, क्रम आदिका निरूपण	
८ मत्यादिज्ञानोंका प्रत्यक्ष परोक्ष रूपमें विभाजन-----	१४
९ प्रत्यक्षज्ञानके इन्द्रियप्रत्यक्ष नोइन्द्रियप्रत्यक्ष दो भेद-----	१४
१० इन्द्रियप्रत्यक्षके पांच भेद-----	१४
११ नोइन्द्रियप्रत्यक्षके तीन भेद-----	१५
१२ अवधिप्रत्यक्षके दो भेद-क्षायोपशमिक और भवप्रत्ययिक-----	१५
१३ क्षायोपशमिक तथा गुणप्रत्ययिक अवधिज्ञानका स्वरूप-----	१५
१४ अवधिज्ञानके आनुगामिकादि छ भेद-----	१५
१५-२१ १ आगमिक अवधिज्ञानका स्वरूप, उसके अन्तगत और मध्यगत भेद तथा पुरतो अन्तगत, मागतो अन्तगत, पाश्वतो अन्तगतादि प्रभेदों का स्वरूप, उन में प्रतिविशेष आदिका निरूपण-----	१६
२२ २ अनानुगामिक अवधिज्ञान-----	१७
२३ ३ वर्धमानक अवधिज्ञान, गाथा ४४-४५ अवधिज्ञानका जघन्य और उत्कृष्ट अवधिकेत्र. गा. ४६-४९ द्रव्य- क्षेत्र-काल-	

भावकी अपेक्षासे अवधिज्ञानकी वृद्धिका स्वरूप गा. ५० द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावका पारस्परिक वृद्धिका स्वरूप गा. ५१	
क्षेत्र-कालकी सूक्ष्मताका निरूपण-----	१७-१८
२४ ४ हीयमान अवधिज्ञान -----	१९
२५ ५ प्रतिपत्ताति अवधिज्ञान -----	१९
२६ ६ अप्रतिपत्ताति अवधिज्ञान-----	१९
२७ द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री अवधिज्ञानका स्वरूप-----	१९
२८ गा. ५२ अवधिज्ञानका उपसंहार-----	२०
२९ मनःपर्यवज्ञानका अधिकारी-----	२०
३० मनःपर्यवज्ञानके ऋजुमति विपुलमति दो भेद-----	२२
३१-३२ – द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री ऋजुमतिविपुलमतिमनःपर्यवज्ञानका स्वरूप और गा. ५३ मनःपर्यवज्ञानका उपसंहार-----	२३
चूर्णिमें-अष्ट रुचकप्रदेश और उपरिम-अधस्तन क्षुल्लकप्रतरका स्वरूप-----	२४
३३ केवलज्ञानके भवस्थ और सिद्धकेवलज्ञान दो भेद-----	२५
३४-३६ भवस्थकेवलज्ञानके भेद और स्वरूप-----	२५
३७ सिद्धकेवलज्ञानके अनन्तरसिद्ध परस्परसिद्ध दो भेद-----	२६
३८ अनन्तरसिद्धके तीर्थसिद्ध, अतीर्थसिद्ध आदि पंद्रह भेद-----	२६
चूर्णिमें-पंद्रह भेदोंका विस्तृत स्वरूप-----	२६
३९ परम्परसिद्धकेवलज्ञान-----	२७
४० द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री केवलज्ञानका स्वरूप-----	२८
चूर्णिमें-केवलज्ञान-केवलदर्शनविषयक युगपदुपयोग-एकोपयोग-कमोपयोगवादकी चर्चा-----	२८-३०
४१ गा. ५४-५५ केवलज्ञानका उपसंहार-----	३०
४२ परोक्षज्ञानके आभिनिबोधिक श्रुतज्ञान के भेद-----	३१
४३ आभिनिबोधिकज्ञान और श्रुतज्ञानकी सदैव सहभाविता-----	३१
चूर्णिमें-मतिज्ञान और श्रुतज्ञानका पृथक्करण	
४४ मतिज्ञान और मतिअज्ञान तथा श्रुतज्ञान-----	३२
४५ आभिनिबोधिक ज्ञानके श्रुतनिश्चित अश्रुतनिश्चित दो भेद-----	३२
४६ अश्रुतनिश्चित आभिनिबोधिकज्ञानके भेद, स्वरूप और उदाहरण-----	३३
गा. ५६ अश्रुतनिश्चित आभिनिबोधिकके औत्पत्तिकी आदि चार भेद गा. ५७-६० औत्पत्तिकी मतिका स्वरूप और उदाहरण गा. ६१-६३ वैनयिकी मतिका स्वरूप और उदाहरण, गा. ६४-६५ कर्मजा मतिका स्वरूप और उदाहरण, गा. ६६-६९ पारिणामिक मतिका स्वरूप और उदाहरण	
४७ श्रुतनिश्चित मतिज्ञानके अवग्रह, ईहा आदि चार भेद-----	३४
४८ अवग्रहके अर्थावग्रह व्यञ्जनावग्रह दो भेद-----	३४
४९ व्यञ्जनावग्रहके भेद और स्वरूप-----	३५
५० अर्थावग्रहके भेद और एकार्थिक शब्द-----	३५
५१ इहाके भेद और एकार्थिक शब्द-----	३६
५२ अपायके भेद और एकार्थिक शब्द-----	३६

५३ धारणाके भेद और एकार्थिक शब्द-----	३७
५४, ५६ २८ प्रकारके मतिज्ञानका और व्यञ्जनावग्रहका प्रतिबोधक और मल्लक दृष्टान्त द्वारा स्वरूपांतरूपण -----	३७-३९
५७ द्रव्यक्षेत्र काल भाव आश्री आभिनिबोधिक ज्ञानका स्वरूप -----	४२
५८ गा. ७०-७५ आभिनिबोधिक ज्ञानके भेद, अर्थ, कालमान, शब्दश्रवणका स्वरूप, एकार्थिक शब्द और उपसंहार-----	४३
५९ श्रुतज्ञानके चौदह भेद -----	४४
६०-६३ १ अक्षरश्रुतके संज्ञाक्षर, व्यञ्जनाक्षर और लब्ध्यक्षर, तीन भेद और स्वरूप-----	४४
६४ २ गा. ७६ अनक्षरश्रुत-----	४५
६५-६८ ३ संज्ञिश्रुतके कालिक्युपदेश, हेतूपदेश और दृष्टिवादोपदेश तीन प्रकार, स्वरूप और ४ असंज्ञिश्रुत -----	४५-४७
चूर्णमें-ईहा, अपोह, मार्गणा, गवेषणा, चिन्ता, विमर्श इन शब्दोंके अर्थका स्पष्टीकरण	
६९ ५ सम्यक्श्रुत-द्वादशाङ्गीके नाम-----	४८
७० ६ मिथ्याश्रुत-भारत, रामायण हंभी मासुरुक्ख आदि प्राचीन अनेक जैनेतर शास्त्रोंके नाम और सम्यक्श्रुत-	
मिथ्याश्रुतका तात्त्विक विवेक-----	४९-५०
७१-७३ ७-८ सादि-अनादि ९-१० सपर्यवसित अपयवसित श्रुतज्ञान, और उनका द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री स्वरूप-----	५१
७४-७५ पर्यवाग्राक्षरका निरूपण और अतिगाढकर्मावृत्त दशामें भी जीवको अक्षरके अनन्तमें भाग जितने ज्ञानका	
शाश्वतिक सद्भाव-----	५२
चूर्णमें-अक्षरपटलका विस्तृत निरूपण-----	५२-५६
७६ ११-१२ गमिक अगमिक श्रुतज्ञान-----	५६
७७ १३-१४ अङ्गप्रविष्ट और अङ्गबाह्यश्रुत-----	५६
७८ अङ्गबाह्यश्रुतके आवश्यक और आवश्यकव्यतिरिक्त दो प्रकार-----	५७
७९ आवश्यकश्रुत-----	५७
८० आवश्यकश्रुतके कालिक और उत्कालिक दो प्रकार-----	५७
८१ उत्कालिकश्रुत के २९ नाम-----	५७
चूर्णमें-२९ उत्कालिकश्रुतके नामोंका व्युत्पत्त्यर्थविवरण	
८२ कालिकश्रुतके २९ नाम-----	५८
चूर्णमें-कालिक श्रुतके नामोंका व्युत्पत्त्यर्थविवरण । टिप्पणीमें नामोंकी कमीबेशीका निर्देश	
८३ आवश्यकव्यतिरिक्तश्रुतका उपसंहार-----	६०
८४ अङ्गप्रविष्टश्रुतके १२ नाम-----	६१
८५ १ आचाराङ्गसूत्रका स्वरूप-----	६१
८६ २ सूत्रकृताङ्गसूत्रका स्वरूप-----	६२
८७ ३ स्थानाङ्गसूत्रका स्वरूप-----	६३
८८ ४ समवायाङ्गसूत्रका स्वरूप-----	६४
८९ ५ विवाहप्रज्ञसिअङ्गसूत्रका स्वरूप-----	६५

१० ६ जाताधर्मकथाङ्गसूत्रका स्वरूप -----	६५
११ ७ उपासकदशाङ्गसूत्रका स्वरूप -----	६६
१२ ८ अन्तकृद्दशाङ्गसूत्रका स्वरूप-----	६७
१३ ९ अनुत्तरौपपातिकदशाङ्गसूत्रका स्वरूप -----	६८
१४ १० प्रश्नव्याकरणदशाङ्गसूत्रका स्वरूप -----	६९
१५ ११ विपाकसूत्रके दुःखविपाक सुखविपाक दो प्रकार, उनका वर्णन और स्वरूप -----	७०
१६ १२ दृष्टिवाद अंगके पांच भेद -----	७१
१७-१०५ परिकर्मदृष्टिवाद के सात प्रकार और इनके भेद-----	७१
१०६ सूत्रदृष्टिवादके २२ प्रकार -----	७३
१०७ पूर्वगतदृष्टिवाद-चौदह पूर्व-----	७४
१०८-११० अनुयोगदृष्टिवादके मूलप्रथमानुयोग और गंडिकानुयोग दो प्रकार तथा इनका स्वरूप----	७६
चूर्णमें-सिद्धगण्डिकाका वर्णन-----	७७
१११ चूलिका दृष्टिवाद-----	७९
११२-११३ दृष्टिवादका परिणाम और विषय -----	८०
११४ द्वादशाङ्गीके विराधकोंको हानि-----	८०
११५ द्वादशाङ्गीके आराधकोंको लाभ-----	८१
११६ द्वादशाङ्गीकी शाश्वतिकता-----	८१
११७ द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री श्रुतज्ञानका स्वरूप-----	८२
११८ गा. ८१ श्रुतज्ञानके चौदहभेद, गा. ८२ श्रुतज्ञानका लाभ, गा. ८३ बुद्धिके आठ गुण, गा. ८२	
सूत्रार्थश्रवणविधि, गा. ८५ सूत्रव्याख्यानविधि और उपसंहार-नन्दीसूत्रकी समाप्ति -----	८३
परिशिष्टम्	
प्रथम परिशिष्ट-नन्दीसूत्रगत गाथाओंका अकारादिक्रम -----	८५
द्वितीय परिशिष्ट-नन्दीचूर्णगत उद्धरणोंका अकारादिक्रम-----	८७
तृतीय परिशिष्ट-नन्दीचूर्णगत पाठान्तर और मतान्तरोंका निर्देश-----	८८
चतुर्थ परिशिष्ट-नन्दीसूत्र और चूर्णगत ग्रन्थ, ग्रन्थकार, स्थविर, नृप, श्रेष्ठी, नगर आदि के विशेषनामोंका अकारादिक्रम -----	८९
पञ्चम परिशिष्ट-नन्दीसूत्र और चूर्णगत विषयविभाग और व्युत्पत्तिदर्शक शब्दोंका अकारादिक्रम- ९६	